अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन



Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6



ग्रामीण आवास–प्रवास
Rural Housing, LifeStyle

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

अध्याय शीर्षक	ग्रामीण आवास–प्रवास
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन / **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण / मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ / साभार / सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Rural Housing, LifeStyle**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi Village - Achharaund Banda - 210 001 Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – ग्रामीण आवास–प्रवास का संक्षिप्त वर्णन

ग्रामीण आवास–प्रवास Rural Housing, LifeStyle

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

आवास–प्रवास

बुन्देलखण्ड के ग्रामीण अन्चल में आवास प्रायः कच्चे एवम् पक्के दोनों प्रकार के होते हैं। सम्पन्न परिवारों के घर पूरे पक्के होते हैं। इन घरों को चौकिया कहते हैं। सबसे पहले घरों में पौर, फिर बरामदा, फिर आँगन, आँगन के चारों तरफ दालान, दालान में नक्कासीदार खम्बे होते हैं। आन्गन के बीच वाले कमरे को मचकौरिया या मझरिया कहते हैं। एक चौका(रसोई) का घर होता है। कमरे घर का पर्यायवाची शब्द है। यह कच्चा होता है। इसे मिट्टी द्वारा पोता जाता है। एक पूजा का कमरा होता है इसे पूजा वाला घर कहते हैं। अनाज भरने के कमरे को बन्डा कहते हैं। एक से अधिक मन्जिल वाले मकान के ऊपर कमरे को अटरिया कहते हैं। नहाने व पीने का पानी रखने के स्थान को घिनौची व जलघरा कहते हैं। आँगन के बीचों–बीच तुलसी का घरुआ बना रहता है, जिसमें लगा तुलसी का पेड़ सारे परिवार की आस्था का प्रतीक होता है। गान्वों के निवास वाले घरों में शौचालय नहीं होते हैं। पशु–गृह में शौचालय बनाने की परम्परा है। आवासों के साथ–साथ ग्रामीण घरों में पशु–गृह अवश्य होता है। यह घर के सामने, घर के बगल में या कुछ दूरी पर होता है। इसी में शौचालय, पानी की व्यवस्था, जानवरों का भूसा भरने के लिए कच्चे घर, लकड़ी, कंडा रखने के लिए जगह होती है। इसमें जानवरों के लिए खुला आन्गन एवम् खपरैल घर बने रहते हैं। इसे चौपयारी कहते हैं।

निज निवास के बाहर चौपाल का चबूतरा होता है। रात के समय आस–पास के घरों के वृद्ध व्यक्ति बैठकर भजन कीर्तन या रामचरित मानस की चौपाईयों का व्याख्यान करते है। मानस को यहां आज भी लोग रामायण कहते है। सावन के माह में चौपालों में लोग आल्हा चैत, अश्विन (क्वांर) की नवरात्रि में अचरी गाते हैं। कभी–कभी विद्वानों व सन्तो द्वारा प्रवचन होते है।

वृद्ध ग्रामीण जन गर्मी के मौसम में बाहर, स्त्रियां छतों पर, वृद्ध महिलायें आन्गन मे लेटती हैं। यहां पर किसी का कमरा निश्चित नहीं होता है। जिसको जहां पर जगह मिल जाती है। वहीं पर वह व्यक्ति अपने बिस्तर लगाकर लेट जाता है। बच्चों की पढ़ाई लिखाई के लिए भी कोई कमरा(स्टडी रुम) नहीं होता है। प्रायः सन्युक्त परिवार होते हैं। सभी मिलजुल कर साथ रहते हैं। सादा जीवन यापन करते हैं। परिवार के मुखिया के अनुरुष सभी अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति कर पाते हैं। व्यवित्तगत तौर पर किसी कार्य को नहीं किया जा सकता है। सभी सदस्य एक दूसरे से बन्धे रहते हैं। घर में मुखिया के निर्णय से ही घर का सन्चालन होता है। आवास आदि मुखिया के निर्णय पर ही बनवाये जाते हैं। घर के सारे सदस्य मुखिया का सहयोग करते हैं।

दिनचर्या

बुन्देलखण्ड में सूर्योदय के पूर्व गृहणियाँ दरवाजे के बाहर उरैन डालती हैं। उरैन डालना सूर्य भगवान के स्वागत का प्रतीक है। उरैन डालने से पूर्व बाहर झाडू बुहारकर या रन्गोली बनाते हैं। उस पर हल्दी–अक्षत चढ़ाते हैं। यह इस बात का भी द्योतक है कि परिवार आगन्तुकों के स्वागत के लिए तैयार है।

घर के स्त्री पुरुष घर के बाहर शौच क्रिया के लिए जाते हैं तथा लौटकर नीम या बबूल की दातून तोड़कर उसका ब्रश बनाकर मुंह साफ करते हैं। महिलाएं पानी भरती हैं, उपले बनाती हैं, मठा बनाती हैं। स्वयम् एवम् भगवान को स्नानादि करवा कर भोजन की व्यवस्था में जुट जाती हैं। पुरुष नित्य क्रिया से निवृत्त होकर गाय–भैन्स के चारे–पानी की व्यवस्था करते एवम् दूध दुहते हैं, इसके बाद खेती के कार्यों में जुट जाते हैं।

यहां के लोग दैनिक दिनचर्या से निवृत्त होकर मन्दिर, दिवाले एवम् घर में तुलसी के झुप/वृक्ष पर जलदान कर हनुमान जी या देवी जी का श्रद्धा पूर्वक स्तवन करते हैं। स्त्रियों द्वारा सांयकाल के समय घर, पूजाघर, मन्दिर एवम् देवताओं के चबूतरों पर आटा के दीपक जलाना पुण्य कार्य माना जाता है। प्रतिदिन महिलायें भोजन के प्रथम थाल में प्रत्येक भोज्य पदार्थ में तुलसीदल डालकर ठाकुर जी को भोग लगाती हैं। यह प्रसाद परिवार के सभी सदस्यों को प्रेम पूर्वक बान्टा जाता है। लोकदेवताओं के चबूतरों पर प्रति दिन दीपदान किया जाता है। महिलायें भजन कीर्तन करती हैं। सोमवती अमावस्या पर पीपल की 108 परिक्रमा लगाकर महिलायें फल, प्रसाद एवम् दक्षिणा देकर ब्राह्मण को भोजन कराती है। कुँवारी लड़कियाँ आटा के शिवलिन्ग को प्रत्येक सन्ध्या में शन्करजी के मन्दिर में रखती हैं।

इस क्षेत्र की महिलायें घर–गृहस्थी में लीन रहती हैं। कृषि कार्य के समय खेतों में अपना शारीरिक योगदान देती हैं। पुरुष खेत–खलिहानों में कार्यरत रहते हैं। कृषि कार्य से फुर्सत होकर यहां के वृद्ध सनई, मून्ज और डाब की रस्सियों से जेजम एवम् सलीता बुनते हैं। दुकानदार दुकान चलाते हैं। शिल्पकार अपने दरवाजे के बाहर शिल्पकारी में दिन व्यतीत करते हैं।

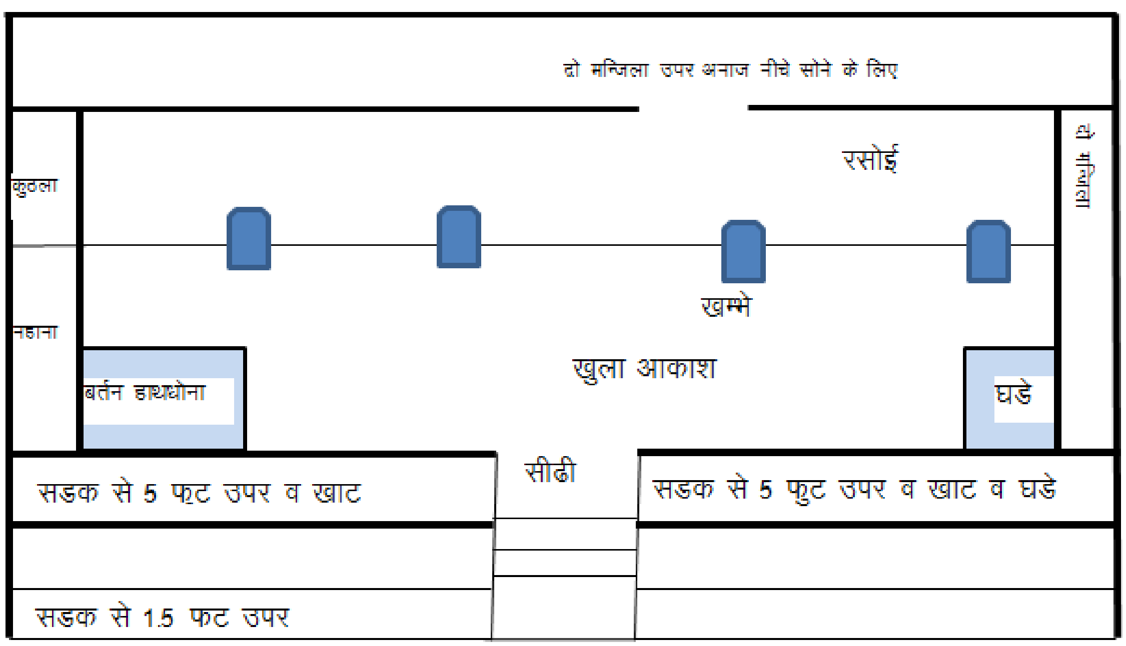
ग्रामीण आवास–प्रवास Rural Housing, LifeStyle

कृषकों की आशा का माह चैत्र होता है। इस माह में फसलों की कटाई का कार्य प्रारम्भ होता है। खेत काटने को चैत काटना भी कहते है। फसल काटने वालों को चेतुआ कहते है।

बुन्देलखण्ड में पर्दा प्रथा का प्रचलन तो है, लेकिन कुछ समाज मे इसका प्रचलन अधिक है। गुर्जर जाति की स्त्रियाँ रास्ते में निकलती हैं तो वाहन पर कपड़ा तानकर पर्दे लगाये जाते हैं। यहां पर प्रत्येक घर में स्त्रियाँ अपने से बड़ों को पर्दा करती हैं। कुर्मी बाह ल्य गान्वों में अपनी सास को भी पर्दा की जाती है। बहू अपनी सास के सामने अपने पति से वार्तालाप नहीं कर सकती है।

अतिथियों के आगमन पर पानी के साथ गुड़ की ढेली दी जाती है। शर्बत एवम् मिर्चवानी /मिरच्वानी भी दी जाती है। मिर्चवानी /मिरच्वानी को बनाने के लिए कालीमिर्च, काला नमक एवम् चीनी को पानी में घोलकर तैयार करते हैं। यह गर्मियों में शीतलता प्रदान करता है। सर्दियों में गुनगुने दूध के साथ गुड़ देने की परम्परा है। आधुनिक परिवेश में यहां पर चाय पीने का प्रचलन भी काफी मात्रा में बढ़ गया है। यहां पर ग्रामीण जन चाय निश्चित मात्रा से अधिक पीते हैं। इस क्षेत्र में जब किसी परिवार में बेटी या बहू की विदा होकर आती है, तो उसके साथ पकवानों से भरकर डलिया आती है। यह पकवान नाईन द्वारा रिश्तेदारों एवम् पड़ोसियों के यहां भिजवाये जाते हैं।

बच्चे स्कूल से आकर अपना समय विभिन खेलों मे व्यतीत करते हैं तथा माता–पिता के साथ घरेलू कार्यो में भी हाथ बटाते हैं। यहां के प्रचलित खेल गुल्ली–डण्डा, अन्टी, कबड्डी, चपेटा, चंदा–पउआ, ताश आदि हैं। कृषक कृषि कार्य से फुर्सत होकर चौपाल पर बैठकर सांयकाल का समय व्यतीत करते है। यहां पर गान्व से सम्बन्धित चर्चायें होती हैं। सर्दियों में अलाव पर चाय की हण्डी चढ़ा दी जाती है। वहीं पर चाय बनती है। सभी लोग एक–एक लोटा चाय बड़े चाव से पी जाते हैं। ये चौपालें देर रात तक लगी रहती हैं। इनमें गान्व, आस–पास के गान्व व घर–परिवारों से सम्बन्धित चर्चायें होती है। गान्व का प्रधान ग्रामीण समस्याओं के निदान का उपाय खोजता है। सभी की सलाह लेकर गान्व की उन्नति के लिए कार्य करता है। चौपालों से यह पता चलता है कि गान्वों के लोगों में साम्प्रदायिक एकता व सौहार्द की भावना कूट–कूट कर समाहित रहती है। इन चौपालों में सभी जातियों के लोग आकर बैठते हैं। यही बुन्देलखण्ड ग्रामीण जीवन की दिनचर्या है।



अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ सौजन्य साभार
हिन्दी के उपन्यासों में बुन्देलखण्ड